Janata Shikshan Prasarak Mandal's

LOKNETE MARUTRAO GHULE PATIL MAHAVIDYALAYA

Dahigaon-Ne,Tal-Shevgaon, Dist -Ahmednagar.Pin414502(MH)

Ph.No.02429-272036

Email- lmgpcollege@rediffmail.com

Website-www.lmgpm.in

Self Study Report (1st Cycle)

Criteria-III

Research, Innovation and Extension

Key Indicator: 3.3

Research Publication and Award

Submitted to

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

BENGALURU

Janata Shikshan Prasarak Mandal's
LOKNETE MARUTRAO GHULE PATIL MAHAVIDYALAYA
Dahigaon-Ne, Tal-Shevgaon, Dist-Ahmednagar. Pin-414502 (MH)
Ph.No.02429-272036
Email- lmgpcollege@rediffmail.com
Website- www.lmgpm.in
Estd.2012

Late Marutraoji Ghule Patil

ID.No:PU/AN/ACS/124/2012 College Code No:1407 PUN Code:CAAA019580 AISHE Code:C-55461

Ref.No.: LMGPM/2023-24/ Date:17/08/2023

Declaration

This is to Declare that this document is prepared by the Internal Quality Assurance Cell (IQAC). All the supportive documents, Links, Reports, Presentations, Photographs, Numerical Data True copies, etc. submitted/Presented in this document are verified by IQAC. The declaration is for the purpose of NAAC accreditation of HEI for 1st Cycle academic year 2017-2018 to 2021-2022.

Co-Ordinator
IQAC
L.M.G.P.M., Dahigaon-Ne,
Tal. Shevgaon, Dist. Ahmednagar

Loknete Marutrao Ghule Patil Mahavidyalaya
ID.NO. PU/AN/ACS/124/2012
Dahigaon-ne, Tal-Shevgaon

I/C Principal
Loknete Marutrao Ghule Patil Mahavidyalaya
Dahigaon-ne,Tal-Shevgaon,Dist-Ahmednagar

3.3.2 Number of books and chapters in edited volumes / books published and papers published in national / international conference proceedings per teacher during last five years

Academic Year 2021-22

Sr. No.	Name of the teacher	Title of the book/chapters published	Title of the paper	Title of the proceedings of the conference	Name of the conference	National / International	Page No.
1	Mr.Navnath Warule	Poultry Management					04
2	Mr.Santosh Bavane		Vaishvikikaran Aur Hindi Bhasha	Impact Of Globalization On Language And Literature	Virtual International Language Conference	International	05-09

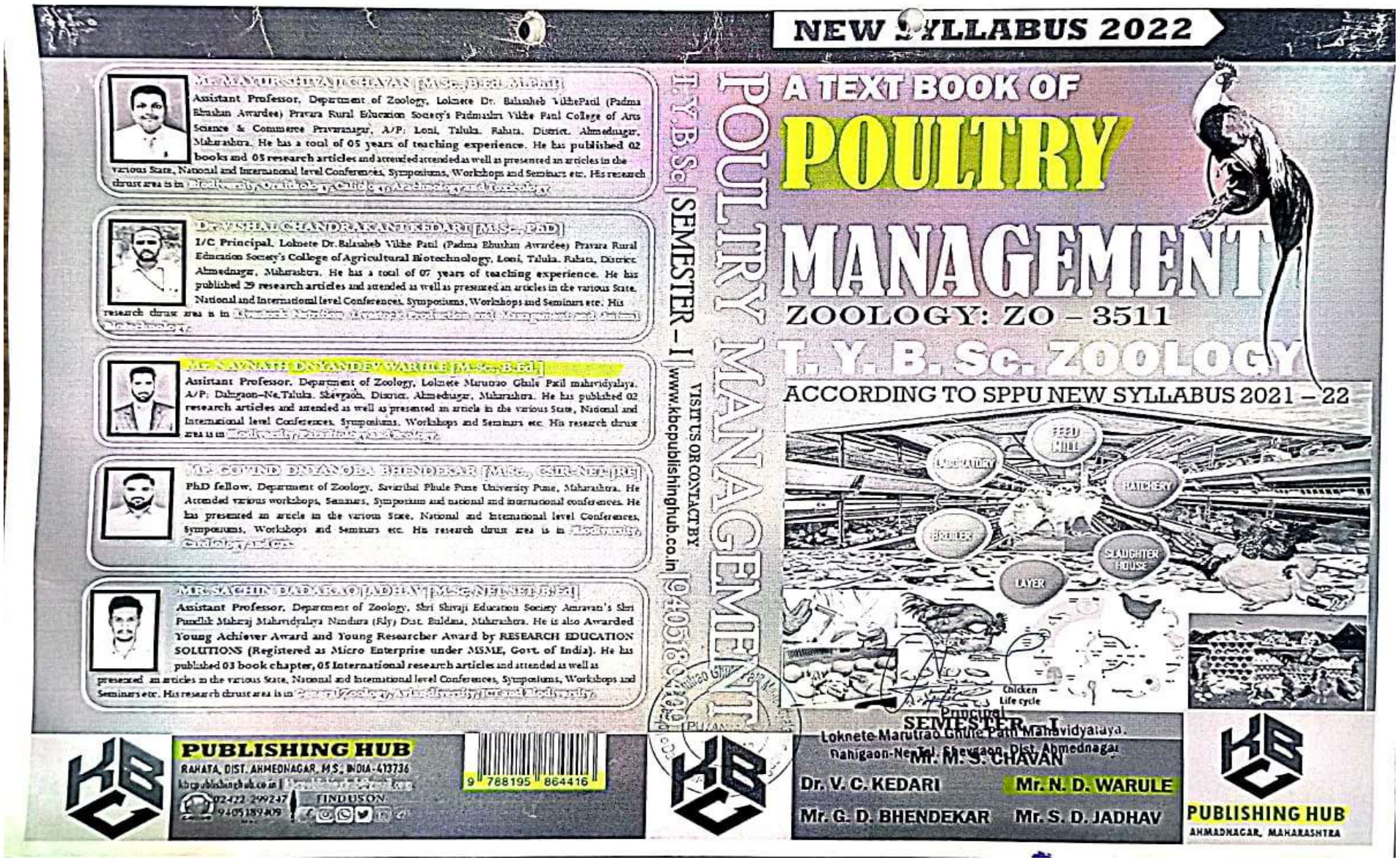

NEW SYLLABUS 2022
A TEXT BOOK OF
POULTRY
MANAGEMENT
ZOOLOGY: ZO – 3511
T. Y. B. Sc. ZOOLOGY
ACCORDING TO SPPU NEW SYLLABUS 2021 – 22
FEED MILL
LABORATORY
HATCHERY
BROILER
SLAUGHTER HOUSE
LAYER
Chicken Life cycle
SEMESTER – I
Mr. M. S. CHAVAN
Dr. V. C. KEDARI
Mr. N. D. WARULE
Mr. G. D. BHENDEKAR
Mr. S. D. JADHAV
PUBLISHING HUB
AHMADNAGAR, MAHARASHTRA
Principal
Loknete Marutrao Ghule Patil Mahavidyalaya,
Dahigaon-Ne, Tal. Shevgaon, Dist. Ahmednagar
POULTRY MANAGEMENT
T.Y.B.Sc | SEMESTER – I | www.kbcpublishinghub.co.in | 9405189409
VISIT US OR CONTACT BY
Assistant Professor, Department of Zoology, Loknete Dr. Balasaheb VikhePatil (Padma Bhushan Awardee) Pravara Rural Education Society's Padmashri Vikhe Patil College of Arts Science & Commerce Pravaranagar, A/P: Loni, Taluka. Rahata, District. Ahmednagar, Maharashtra. He has a total of 05 years of teaching experience. He has published 02 books and 05 research articles and attended attended as well as presented an articles in the various State, National and International level Conferences, Symposiums, Workshops and Seminars etc. His research thrust area is in
I/C Principal, Loknete Dr.Balasaheb Vikhe Patil (Padma Bhushan Awardee) Pravara Rural Education Society's College of Agricultural Biotechnology, Loni, Taluka. Rahata, District Ahmednagar, Maharashtra. He has a total of 07 years of teaching experience. He has published 29 research articles and attended as well as presented an articles in the various State, National and International level Conferences, Symposiums, Workshops and Seminars etc. His research thrust area is in
Assistant Professor, Department of Zoology, Loknete Marutrao Ghule Patil mahavidyalaya, A/P: Dahigaon–Ne,Taluka. Shevgaon, District. Ahmednagar, Maharashtra. He has published 02 research articles and attended as well as presented an article in the various State, National and International level Conferences, Symposiums, Workshops and Seminars etc. His research thrust area is in
PhD fellow, Department of Zoology, Savitribai Phule Pune University Pune, Maharashtra. He Attended various workshops, Seminars, Symposium and national and international conferences. He has presented an article in the various State, National and International level Conferences, Symposiums, Workshops and Seminars etc. His research thrust area is in
Assistant Professor, Department of Zoology, Shri Shivaji Education Society Amravati's Shri Pundlik Maharaj Mahavidyalaya Nandura (Rly) Dist. Buldana, Maharashtra. He is also Awarded Young Achiever Award and Young Researcher Award by RESEARCH EDUCATION SOLUTIONS (Registered as Micro Enterprise under MSME, Govt. of India). He has published 03 book chapter, 05 International research articles and attended as well as presented an articles in the various State, National and International level Conferences, Symposiums, Workshops and Seminars etc. His research thrust area is in
PUBLISHING HUB
RAHATA, DIST. AHMEDNAGAR, M.S., INDIA-413736
02422 299247
9405189409
FIND US ON
9 788195 864416

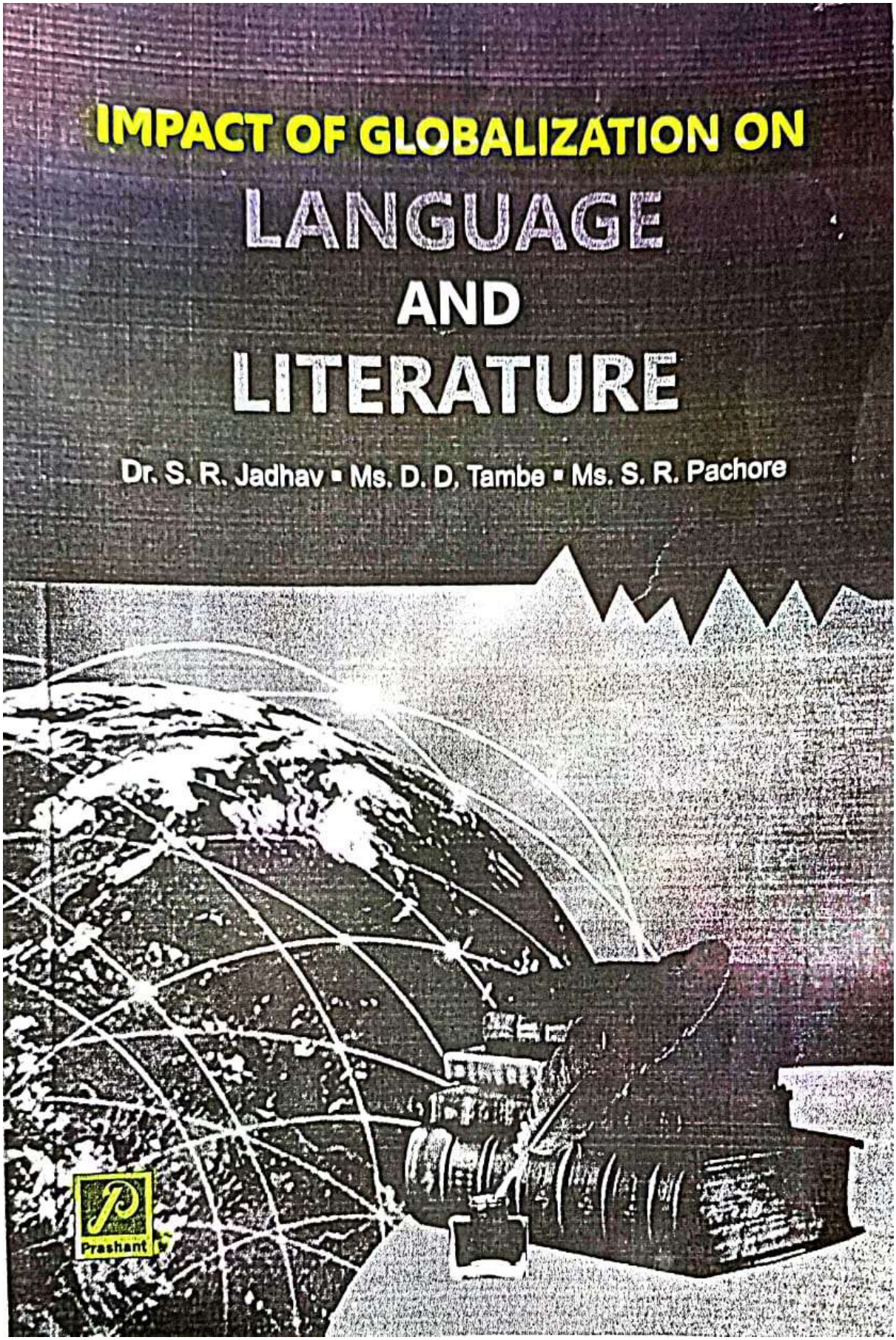
IMPACT OF GLOBALIZATION ON
LANGUAGE
AND
LITERATURE
Dr. S. R. Jadhav ▪ Ms. D. D, Tambe ▪ Ms. S. R. Pachore
Prashant

[illegible]. वैश्वीकरण से प्रभावित मानवी जीवन
(उपन्यास 'उत्कोच' के विशेष संदर्भ में) 175
– डॉ. संदिप तपासे

[illegible]. वैश्वीकरण और जनसंचार माध्यम.. 182
– डॉ. पूनम जिभाऊ बोरसे

[illegible]. वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास –'अकेला पलाश' 188
– डॉ. सरला सुर्यभान तुपे

[illegible]. वैश्वीकरण : पर्यावरण संरक्षण तथा संवर्धण
('अभंगवाणी' के संदर्भ में...) 194
– डॉ. प्रविण मन्मथ केंद्रे

[illegible]. वैश्वीकरण की आंधी से उजडी असुर जाती 199
– प्रा. देशमुख शहेनाज अ. रफिक

[illegible]. आधुनिक परिदृश्य में संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग 204
– प्रा. अनिल उत्तम पारधी

[illegible]. वैश्वीकरण के युग में हिंदी भाषा.. 208
– डॉ. प्रवीण तुलशीराम तुपे

[illegible]. वैश्वीकरण और हिंदी भाषा 213
– प्रा. सोनाली रामदास हरदास

[illegible]. वैश्वीकरण और जनसंचार माध्यम.. 216
– डॉ. शिला महादू घुले

[illegible]. 'वैश्वीकरण का हिंदी भाषा पर प्रभाव' 221
– प्रा. सुनील चांगदेव काकडे

[illegible]. वैश्वीकरण और हिंदी भाषा... 224
– प्रा. संतोष अंबादास बावणे

[illegible]. बीसवीं सदी के अंतिम दशक के हिंदी और मराठी के सामाजिक
नाटकों में चित्रित जातीय संघर्ष 227
– डॉ. राहुल मराठे

[illegible]. वैश्वीकरण की परिभाषा एवं स्वरूप.. 235
– डॉ. बाळासाहेब धोंडीराम बाचकर

[illegible]. वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में उदय प्रकाश का साहित्य 240
– डॉ. शरद कचेश्वर शिरोळे, प्रा. दिपाली दत्तात्रय तांबे

वैश्वीकरण और हिंदी भाषा

प्रा. संतोष अंबादास बावणे
हिंदी विभागप्रमुख,
लोकनेते मारुतराव घुले पाटील महाविद्यालय, दहीगाव-ने,
ता. शेवगाव, जि. अहमदनगर

प्रस्तावना : वैश्वीकरण शब्द अंग्रेजी के 'ग्लोबलायझेशन' का हिंदी रुपांतर है। ग्लोबलायझेशन के लिए हिंदी मे भूमंडलीकरण शब्द का भी प्रयोग किया जाता है। 'वसुधैव कुटुंबकम' इस उक्ती के अनुसार समूचा विश्व एक परिवार है। मोटे तौर मे वैश्विकरण विश्वस्तरपर एक ऐसी प्रक्रिया है, जो समय और स्थान कि सीमाओं को तोडकर व्यक्ती-व्यक्तियों के बीच परस्पर संबंध निर्माण करती है।

वैश्वीकरण के दौर मे हिंदी का प्रचार-प्रसार भारत मे ही नही, भारत के बहार भी हो रहा है। किसी भी भाषा के वैश्विक स्वरूप की ज्ञान प्राप्ति करने के लिए यह जानना आवश्यक है कि, उस भाषा का प्रयोग कितने लोग करते है। सयुंक्त राष्ट्रसंघ के अनुसार १११.२ करोड जनता हिंदी भाषा को जानती है! वैश्विक स्तर पर कई देशों के विश्वविद्यालयो मे हिंदी अध्ययन-अध्यापन एवं अनुसंधान की सुविधा उपलब्ध है। उसमें इटली, डेन्मार्क, नॉर्वे, रुमानिया, हंगेरी, बुल्गारिया, हॉलंड, स्वित्झर्लंड, अमेरिका, चीन, ऑस्ट्रेलिया, स्पेन आदि राष्ट्रो मे भी हिंदी का अध्ययन-अध्यापन का कार्य चल रहा है। इन देशो मे हिंदी भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त करने के लिए करोडो डॉलर खर्च हो रहे है। इसलिए हिंदी अध्यापको के लिए विदेश मे अध्यापन के सुअवसर प्राप्त हो रहे है।

वैश्वीकरण के बढते माहौल ने अनुवाद क्षेत्र को और अधिक महत्व प्राप्त किया है। अनुवाद वर्तमान जीवन की आवश्यकता है। किसी समाज की संस्कृति, राष्ट्र की सभ्यता एवं संस्कृती जानना, तुलनात्मक अध्ययन, अनुसंधान कार्य, राष्ट्रीय एकात्मता को बढाना है तो अनुवाद अत्यंत उपयोगी सिध्द होता है! इस क्षेत्र मे हिंदी भाषा तरक्की के राह पर दिखाई देते है। देश-विदेश के जन-मन तक पहुँचना हो तो अनुवाद के सिवा दुसरा विकल्प नही। भाषा पर अधिकार पानेवाला कोई भी व्यक्ति इस क्षेत्र मे रोजगार का अच्छा अवसर प्राप्त कर सकता है! भारत जैसे बहुभाषिक एवं विशालकाय देश के जन-मन तक पहुँचना हो तो हिंदी के अतिरिक्त दुसरा विकल्प नही।

वैश्वीकरण के युग मे विज्ञापन को अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। हम वस्तु खरीदते समय विज्ञापन का सहारा लेते है। विज्ञापन वस्तुओं का

जानकारी नही देता बल्कि उसके उपभोग की ऐसी ललक बढाता है कि, उपभोक्ता आवश्यक हो या न हो उसे खरीद ही लेता है। आज आदमी का सारा समय अर्थात सुबह से लेकर रात सोने तक विज्ञापित वस्तुओं के साथ मे बीत जाता है। सुबह से दांत मांजने की पेस्ट से लेकर हमारा प्रारंभ हो जाता है, चाय, नाश्ता, भोजन, दुध, चावल, घी, आटा, खिलौने, कपडे, साबुन, मकान, प्लॉट, सौंदर्य प्रसाधान के साथ-साथ मच्छर के बचने के साधन आदि से हम जो अवगत होते है, वह विज्ञापन ही होता है। विज्ञापन जनसंचार के अनेक साधनो के जरिए मनुष्य पर प्रभाव डालता है। विज्ञापन क्षेत्र मे हिंदी भाषा ने अपनी अहंम भूमिका निभाई है।

आज के वैश्वीकरण के युग मे हिंदी भाषा के विकास मे मीडिया का महत्वपूर्ण योगदान है। मीडिया को लोकतंत्र का चतुर्थ स्तंभ कहा जाता है। मीडिया का क्षेत्र विशाल है। जनसंचार क्रांती के दौर मे इलेक्ट्रोनिक और प्रिंट मीडिया का युग कहा जाए तो गलत नही होगा। इलेक्ट्रोनिक माध्यमो के बडे योगदान के कारण एवं हिंदी भाषा के प्रयोग से, हिंदी भाषा का निरंतर विकास हो रहा है। विश्व मे घटित घटनाओं का लेखा-जोखा इलेक्ट्रोनिक मीडिया के कारण हम तुरंत देख या सून सकते है। इसमे टेलेफोन, रेडीओ, दूरदर्शन, संगणक आदि का समावेश होता है। प्रिंट मीडिया मे समाचार पत्र के साथ-साथ पत्र-पत्रिकाओं का समावेश होता है। समाचार पत्र ने आज घर-घर मे स्थान जमाया है। समाचार पत्र पढे बिना दिन की शुरुआत नही होती! अर्थात, चाय के प्याले के साथ-साथ समाचार पत्र हाथ मे न हो तो मनुष्य बेचैनी महसूस करता है। आज के युग मे समाचार पत्र जनसंपर्क का माध्यम बन गया है, लेकीन बुनियादी तौर पर वैश्वीकरण को मजबूत बना रहा है। अर्थात, विभिन्न लोगो को एक सूत्र मे बांधने का कार्य हिंदी भाषा के मध्यम से समाचार पत्र कर रहा है।

हिंदी को विश्व स्तर पर पहुचाने के लिए फिल्मो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। फिल्म मीडिया का एक सशक्त मध्यम है। फिल्म की लोकप्रियता मे कोई कमी नही आई है। अच्छी फिल्मो को देखने के लिए लोग आज भी सिनेमा घरो मे जाते है। हिंदी फिल्मे जहा अपनी मायावी दुनिया से दर्शको को अपनी ओर संमोहित करती है। इतना ही नही, वह देश के आम आदमी की तस्वीर को भी प्रदर्शित करती है। भारतीय फिल्मो के निर्माण क्षेत्र मे सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक और धार्मिक पहलुओं का फिल्मांकन किया जाता है। हिंदी साहित्य पर भी कई फिल्मे बनाई गई है। जैसे- फणीश्वरनाथ रेणू कृत 'तिसरी कसंम', मन्नू भंडारी कृत 'यही सच है', धर्मवीर भारती कृत 'सूरज का सातवा घोडा' आदि। इस प्रकार हिंदी साहित्य पर अनगिनत फिल्मे बनाई गई है। वैश्वीकरण के दौर मे फिल्मो के माध्यम

से हिंदी भाषा अनपढ से शिक्षित जनसमुदाय के दिलो मे बैठ गई है।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि, वैश्विक स्तर पर हिंदी जाननेवालो की संख्या अधिक होने से वह हर क्षेत्र मे सफल हो रही है। हिंदी भाषा पर कई देश की मूल भाषाओ का प्रभाव पड रहा है। इसलिए विश्व स्तर पर हिंदी के नए-नए रूप विकसित हो रहे है।

संदर्भ ग्रंथसूची :

१. जनसंचार और विविध माध्यम, डॉ. शम्बुनाथ द्विवेदी
२. सिनेमा और फिल्मांतरित हिंदी साहित्य, डॉ. गोकुल क्षीरसागर
३. जनसंचार एवं पत्रकारिता, डॉ. रेश्मा नदाफ
४. हिंदी गद्य साहित्य के विविध आयाम, डॉ. हेमलता श्याम पाटील (माने)

Principal
Loknete Marutrao Ghule Patil Mahavidyalaya
Nahigaon-Ne, Tal. Shevgaon, Dist. Ahmednagar